डॉ. वाई. आर. सत्याजी राव
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन, रुड़की

निदेशक की कलम से .....

आपको यह अवगत कराते हुए मुझे अपार प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की, हिन्दी दिवस–2025 के सुअवसर पर, विगत 32 वर्षों से निरंतर प्रकाशित की जा रही अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका "प्रवाहिनी" के 32वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। जैसा कि सर्वविदित है कि शासकीय कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार और इसके प्रभावी कार्यान्वयन एवं अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में हिन्दी गृह–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार और विकास को बढ़ावा देने की दिशा में केंद्र सरकार द्वारा समुचित एवं प्रभावी प्रयास किये जा रहे हैं। हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो देश के जनमानस को एक सूत्र में बाँध सकती है।

मुझे यह कहते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है कि संस्थान, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी उद्देश्यों का शत–प्रतिशत अनुपालन करने हेतु पूर्णतः प्रतिबद्ध है। हमारे संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिन्दी में किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं प्रचार–प्रसार के लिए संस्थान के दैनिक कार्यों के अतिरिक्त हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन, हिन्दी कार्यशालाओं, हिन्दी सम्मेलनों, संगोष्ठियों एवं जन जागरूकता कार्यक्रमों का नियमित रूप से राजभाषा हिन्दी में आयोजन किया जाए। आज तक हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन मात्र हिन्दी साहित्य, मनोरंजन, राजनीति एवं सामाजिक विषयों तक ही सीमित था परन्तु अब ये पत्रिकाएं, तकनीकी, वैज्ञानिक, अनुसंधान एवं चिकित्सा क्षेत्रों से सम्बंधित विषयों में भी प्रकाशित हो रही हैं।

प्रस्तुत पत्रिका में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के साथ–साथ समाज के प्रबुद्ध लेखकवर्ग द्वारा हिन्दी साहित्य, मनोरंजन एवं तकनीकी विषयों पर लिखी गई रचनाओं को समुचित स्थान प्रदान किया गया है। हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन से शासकीय कार्यों के निष्पादन हेतु हिन्दी के प्रति एक अनुकूलतम वातावरण तैयार होता है जो लेखकों की रचनाधर्मिता को प्रोत्साहित करता है।

इस पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन से सम्बद्ध समस्त पदाधिकारी तथा विद्वत लेखकगण पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत अंक सभी पाठकों को अत्यंत उपयोगी, महत्वपूर्ण, रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेगा। मैं इस पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

सत्याजी राव

(वाई. आर. सत्याजी राव)